आपातकाल में सृजन फुलवारी

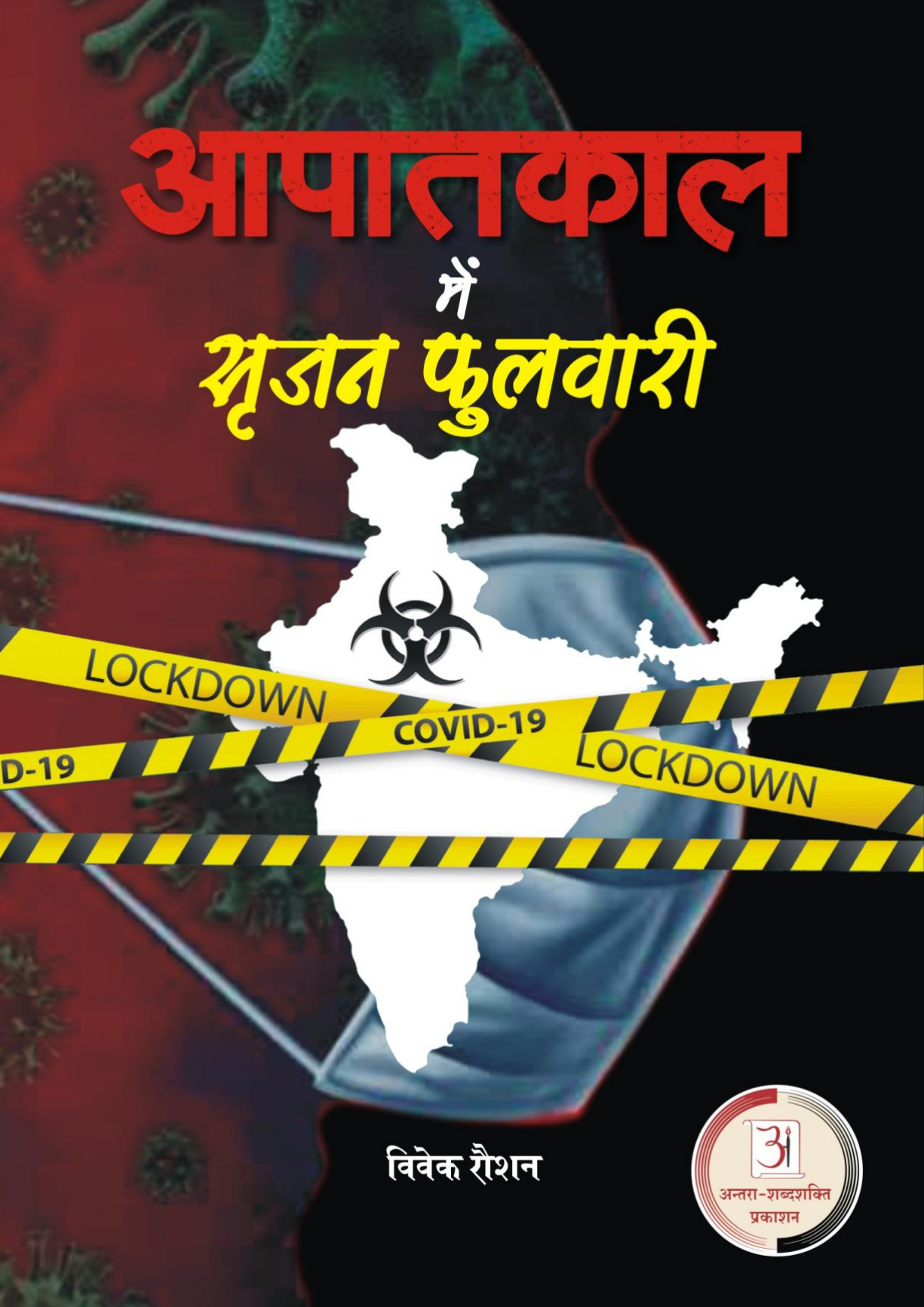

विवेक रौशन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

विवेक रौशन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-162-6

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 विवेक रौशन

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY VIVEK ROSHAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की

आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	पलकों पे अपने	6
2.	हम भी आज	7
3.	गम न कर	8
4.	बच्चों की तरह बे-फ़िक्र	9
5.	बनकर एक ख्याल	10
6.	सब अच्छे निकले	11
7.	अँधेरा घना है	12
8.	अब नहीं मिलता है इंसाँ	13
9.	ज़िन्दगी	14
10.	दुनिया से सवाल करना होगा	15
11.	मुल्क में कैसा ये दौर आ रहा है	16
12.	फुटपाथ पर बच्चे बैठते क्यूँ हैं	17
13.	कैसी अपनी मजबूरी है	18
14.	खुश रहे जन गण मन	19
15.	तुम गुलाम बन चुके हो	20
16.	रोज की तरह	21

पलकों पे अपने

पलकों पे अपने बिठाता कौन है
उम्र भर साथ निभाता कौन है

हाल-ए-दिल सब पूछा करें
अपना हाल सुनाता कौन है

सुख में लोग साथ-साथ चलें
दुःख में हाथ बढ़ाता कौन है

फूलों को सब अपना बतातें
काँटों को गले लगाता कौन है

झुकते हैं सदा बे-जमीर वाले
जमीर वालों को झुकाता कौन है

हम भी आज

हम भी आज हर महफ़िल की शान होते
किसी के दिल से गर निकाले न गए होते

तन्हाइयों से गर अपना रिश्ता न होता
तो हम भी सुकून की नींद सो गए होते

मुहब्बत में मिले दर्द ने हमें ज़िंदा रखा
वरना हम तो कब के मर गए होते

तुम जिसे आवाज़ दे रहे हो "रौशन"
काश वो लौट कर आ गए होते।

गम न कर

गम न कर ज़िन्दगी पड़ी है अभी
वक़्त के साथ चल वक़्त कीमती है अभी

कब तलक तू यूँ खुद को सताएगा
ज़िन्दगी तुझ से यही पूछती है अभी

अंधेरों से डर के घर में न बैठा कर
बाहर निकल बाकी रौशनी है अभी

किसी के चले जाने से यूँ उदास न हो
इश्क़, दोस्ती से बेहतर शायरी है अभी

बच्चों की तरह बे-फ़िक्र

बच्चों की तरह बे-फ़िक्र रहना सीख लो
ज़िन्दगी जीना है तो पहले लड़ना सीख लो

ज़िन्दगी की राह में कई मोड़ मिलेंगे
रास्तों पर चलने से पहले ठहरना सीख लो

खुदा भी जमीं पे इंसान को रोते हुए भेजता है
वो कहता है कि हँसने से पहले रोना सीख लो

इश्क़, प्यार, मोहब्बत ये सब इंतज़ार के नाम हैं
इश्क़ करना है तो पहले इंतज़ार करना सीख लो

ज़िन्दगी के सफर में गर दूर तक जाना है
समंदर की तरह पहले चुप-चाप बहना सीख लो

बनकर एक ख्याल

बनकर एक ख्याल वो मेरा हाल पूछते हैं
ख्वाबो में आकर वो हमसे सवाल पूछते हैं

जिनके जाने से ये दिल दर्द से भर गया
कैसे हो तुम इतना दर्द से मालामाल पूछते हैं

मेरी लिखी ग़ज़लों से जब वो रू-ब-रू हुए
किसका लिखते हो तुम दिल-ए-हाल पूछते हैं

गम की ख़ुशी कभी चेहरे पर जो आ गई
कैसे रहते हो तुम हमेशा बे-मिशाल पूछते हैं

वो कैसे समझेंगे तुम्हारे दर्द को "रौशन"
हँस कर जो तुमसे तुम्हारा दर्द-ए-हाल पूछते हैं!

सब अच्छे निकले

सब अच्छे निकले एक मैं ही बुरा रह गया
इक दिल मिला वो भी दर्द से भरा रह गया

मेरे साथ चलने वाले मंज़िल पर पहुँच गए
मैं ही अकेला रास्तो की तरह ठहरा रह गया

फूलों की तरह खिला भी मैं महका भी मैं
मुक़द्दर में था बिखरना मैं बिखरा रह गया

जीने की ख्वाहिश में हर रोज़ मरता रहा
वक़्त गुज़रता गया और मैं ज़रा रह गया

इक मोहब्बत थी साथ में वो भी मिट चुकी
खुदा तेरी दुनिया में अब क्या धरा रह गया

अँधेरा घना है

अँधेरा घना है चिराग जलाते रहना
दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहना

नफरतों के साए में दुनिया पल रही है
तुम मोहब्बतों के फूल खिलाते रहना

सब अपने है अपनों से बैर क्या रखना
एक-दूसरे के घरों में आते-जाते रहना

ज़िन्दगी का सफर पल-दो-पल का है
इंसान-ए-जज्बात को बचाते रहना

अब नहीं मिलता है इंसाँ

अब नहीं मिलता है इंसाँ किसी से भी प्यार से
खुद को बाँध लिया है सब ने इक दय्यार से।

लिखता हूँ हकीकत जब मैं कलम की धार से
खूं हीं खूं निकलता है जिस्म के आर-पार से।

झूठ का साथी बने औ सच को मरता छोड़ दे
बू सी आती है गुलामी की ऐसे फनकार से।

आदमी हीं आदमी के ख़ून का प्यासा बना है
क्या मिलेगा आदमी को ऐसे इस संसार से।

बन्द कर के आवाज़ें हमारा हौसला तोड़ दोगे
हम नहीं डरते ऐसे दमनकारी सरकार से!

ज़िन्दगी

उलझनों में रहकर भी सुलझे रहना ही तो ज़िन्दगी है,
सब कुछ हार कर भी जीत की कल्पना करना ही तो ज़िन्दगी है,
अपनों को खोकर,
किसी गैर को अपना बनाने का प्रयत्न करना ही तो ज़िन्दगी है,

दिल ज़ख्मों से भरा हो, पर होंठ सदा मुस्कुराते रहें,
यही खूबसूरत एहसास हीं तो ज़िन्दगी है,
ख्वाबों के टूट जाने पर,
नए ख्वाब देखने की अभिलाषा रखना ही तो ज़िन्दगी है,

बनते-बिगड़ते हालातो का
हिसाब ही तो ज़िन्दगी है,
ज़िन्दगी है सदा चलते रहने का नाम
टूटकर, गिरकर, बिखरकर, सम्भलना ही तो ज़िन्दगी है।।

दुनिया से सवाल करना होगा

आवाज़ बुलंद रखना
एकता बनाये रखना
हौसला बढ़ाये रखना
सत्य के साथ खड़े रहने का साहस रखना
गलत को गलत कहने की हिम्मत भी रखना
अपनों पर हो रहे हिंसा का बहिष्कार करना।
दुनिया में हरएक अपने से सवाल करना
दुनिया के बनाये जाल में, हम क्यों फँस जाते हैं?
कभी खुद से भी ये सवाल करना
मन में किसी के लिए नफ़रत मत रखना
दिल में सिर्फ प्यार ही प्यार रखना।
पर हार कर भी दुनिया से सवाल करना
जीत कर भी दुनिया से सवाल करना
सवाल हर हाल में करना
क्योंकि सवाल काँटों की तरह होते हैं, जो चुभते हैं।
हमारे सवाल चुभते हैं, इसलिए वो हमसे डरते हैं
हमसे डरते हैं, इसलिए हमारे सवाल करने के
अधिकार को हमसे छीनते हैं।
हमारी आवाज़ को बंद करते हैं,
हमारी आवाज़ ही हमारी पहचान है
हमें अपनी आवाज़ को खामोश नहीं होने देना होगा
अपने आने वाले कल के सवालों का भी हमें जवाब देना होगा
इसलिए हमें आज दुनिया से सवाल करना होगा।

मुल्क में कैसा ये दौर आ रहा है

मुल्क में कैसा ये दौर आ रहा है,
हाथ में पत्थर और
चेहरों पर नकाब आ रहा है।
जो बचाते हैं सरहदों पर
आबरू देश की,
उन्हीं जवानों को
पत्थरों से मारा जा रहा है।
जिनकी उम्र है हाथों में
किताब उठाने की,
उन हाथों में पत्थर
और बारूद दिया जा रहा है।
ये कैसा खेल वादियों में
खेला जा रहा है,
जहाँ इंसान को
हैवान बनाया जा रहा है।
है कौन जो अपनों में
नफरत का ज़हर भर रहा है,
देखिए ज़रा गौर से
अपने वतन से
जज़्बा-ए-मोहब्बत जा रहा है।

फुटपाथ पर बच्चे बैठते क्यूँ हैं

फुटपाथ पर बच्चे बैठते क्यों हैं?
हाथ फैला कर बच्चे गिड़गिड़ाते क्यों हैं?
रोटी के एक निवाले के लिए बच्चे तरसते क्यों हैं?
दर-दर भटक कर बच्चे ठोकर खाते क्यों हैं?
न कंधे पर बाप का हाथ है
न सर पर माँ का आँचल है
इस फटेहाल हालात में बच्चे रहते क्यों हैं?
सारी सरकारें जब ग़रीबों के नाम पर बनती हैं,
तो वर्षो से ये बच्चे इसी हालात में क्यों हैं?
करोड़ो की योजनाएँ, परियोजनाएं
सब ग़रीबों के लिए बनाई जाती है,
फिर भी इन मासूम बच्चों के हाथों में कटोरा क्यों है?
संसद के अंदर उजाला ही उजाला है
पर इस देश के माथे पर ये काला दाग क्यों है?
कौन है जो इन मासूम बच्चों का इस्तेमाल करता है?
अपने भविष्य को बनाने के लिए
इन मासूमों के भविष्य को ख़राब करता है?
क्यों सरकारें इन मासूमों पर ध्यान नहीं देती?
ये नेता, अभिनेता, क्रिकेटर, पूंजीपति नहीं है,
क्या इसलिए सरकारें इनका कोई संज्ञान नहीं लेती?
जब देश का भविष्य फुटपाथ पर पल रहा है,
तो हम कैसे समझे मेरा देश आगे बढ़ रहा है..!

कैसी अपनी मजबूरी है

कैसी अपनी मजबूरी है
जीना भी कितना मुहाल है
मेरे लोग दर्द में जी रहें
कैसी अपनी ये बदहाली है
गुलशन के फूल सब टूट रहें
न कोई माली है न सवाली है
कैसी अपनी मजबूरी है
जीना भी कितना मुहाल है
मेरे देश के बच्चे मर रहें
संसद में कितनी खुशहाली है
जिन माँ के बच्चे मर गए
उन माँ की कोख खाली है
कैसी अपनी मजबूरी है
जीना भी कितना मुहाल है
सोने से भरी है नेताओं की थाली
गरीबों के पास खाली थाली है
भविष्य देश का खतरे में है
खतरे में हर एक फूल की डाली है
कैसी अपनी मजबूरी है
जीना भी कितना मुहाल है

खुश रहे जन गण मन

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
हम वतन की जान है
हमको न करना जुदा
हमीं से वतन की पहचान है।

खुशियाँ मिले या गम मिले
मिल कर रहेंगे हम सदा
आँच आये गर अपने वतन पर
मर के करेंगे अपना हक़ अदा।

खुश रहे अहल-ए-वतन
खुश रहे अपना ये चमन
खुश रहे जन गण मन
खुश रहे अपना ये वतन।

तुम गुलाम बन चुके हो

जब कातिल तुम्हें मसीहा लगने लगे,
और अपने लोग जो
निहत्थे है, लाचार है
जिनके पास खोने के
लिए अपनी जान के
सिवा कुछ भी नहीं है
वो गुनहगार लगने लगे
तो समझ लेना की
तुम गुलाम बन चुके हो
तुम्हारी जान अब तुम्हारी नहीं रही
तुम्हारा जिस्म अब तुम्हारा नहीं रहा
क्यूँकि तुम अब तुम नहीं रहे
तुम अपने मसीहा के हाथ की
कटपुतली बन चुके हो,
जिसे एक बम की माफिक
कभी भी, कहीं भी
इस्तेमाल किया जा सकता है
और तुम्हें बर्बाद किया जा सकता है
क्यूँकि तुम अब तुम नहीं रहे
तुम गुलाम बन चुके हो
तुम गुलाम बन चुके हो!!

रोज की तरह

रोज़ की तरह आज भी "माँ"
कबूतरों को दाना देने छत
पर आई थी
पर आज का दृश्य कुछ अलग था
एक तरफ कबूतरों का झुण्ड था
तो दूसरे तरफ चार-पाँच कौवे
बैठे थे घात लगाए,
जैसे हीं कबूतरों का झुण्ड दाना खाने
आगे बढ़ता है, वैसे हीं
कौवे उन पर आक्रमण कर देते हैं
कोई अपनी चोंच से कबूतरों का
पँख नोचता है
तो कोई कबूतरों को घायल करता है,
कौवे चाहते तो कबूतरों के साथ
मिल-जुल कर दाना खा सकते थे
पर उन्हें एकाधिकार चाहिए था
सो उन्होंने आक्रमण किया,
ये जलन, ईर्ष्या, द्वेष हर जगह है
पशु-पक्षियों में है तो उसकी एक
ख़ास वजह है की उनमे
सोचने-समझने की छमता नहीं होती
पर मनुष्यों में ये बेवजह होती है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आपातकाल जैसी परिस्तिथि जब कभी किसी देश में उत्पन्न होती है तो वो अपने साथ निराशा लेकर आती है। लोगों के दिनचर्या में बदलाव आ जाते हैं, बाजार की स्तिथि गंभीर हो जाती है, पूरा देश स्थिर हो जाता है इसलिए ऐसी परिस्थिति में निराशा का आना स्वाभाविक है। जीवन में रात व दिन की तरह आशा व निराशा के क्षण आते-जाते रहते हैं। हर व्यक्ति को आशावादी होना चाहिए क्यूँकि सुखी और निराशा से मुक्त जीवन जीने के लिए सकारात्मक सोच का होना बहुत आवश्यक है।

एक साहित्यकार के लिए सृजन करना, पढ़ना हमेशा से एक सुखद एहसास रहा है। आपातकाल जैसी परिस्थिति एक साहित्यकार को मौका देती है निराशा नहीं आशा देती है- और अधिक पढ़ने का, साहित्य के विभन्न विधाओं से परिचित होने का, अच्छे साहित्यकारों को पढ़ने का, समाज को समझने का, खूबसूरत एंव उत्कृष्ट रचनाओं को सृजन करने का और अपने आप को, समाज को निराशा से दूर रखने का।

इसलिए अन्तरा शब्दशक्ति ने लगातार सृजन जारी रखने के लिए साहित्यकारों को सृजन से जोड़े रखा। इसके लिए मैं अन्तरा शब्दशक्ति समूह का धन्यवाद करता हुँ।

रचनाकार

विवेक रौशन

टेलीकॉम कालोनी रोड नं.-१,
नार्थ गोला रोड, बेली रोड दानापुर
पटना बिहार (८०१५०३)

Email- roushanvivek7@gmail.com
Mobile -9871941576

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-162-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/